

Press Release

Sahitya Akademi Organises Face-to-Face and Multilingual Story Reading Programmes at New Delhi World Book Fair 2026

New Delhi, 16 January 2026: Sahitya Akademi organised a Face-to-Face programme followed by a Multilingual Short Story Reading programme during the New Delhi World Book Fair 2026 on 16 January 2026 at Hall No. 2, Bharat Mandapam, New Delhi.

The Face-to-Face programme featured Shri Kuldeep Singh Deep and Shri Vishwas Patil, two distinguished literary figures. Shri Kuldeep Singh Deep, Sahitya Akademi Bal Sahitya Puraskar awardee and a noted contributor to theatre techniques, particularly Punjabi Opera, spoke about his play Opera, offering insights into the inspiration behind its creation. He also discussed his recent plays Chhalla and Jallianwala Bagh, for which he received the Bal Sahitya Puraskar, and emphasised the social relevance of theatre in addressing issues of everyday life, human relationships, and society. The second speaker, Shri Vishwas Patil, renowned Marathi fiction writer and Sahitya Akademi Award winner, spoke at length about his significant works, including Mahanayak, inspired by the life of Netaji Subhas Chandra Bose; Panipat, based on the Third Battle of Panipat; and Jadhajati, depicting the suffering of people displaced by a dam.

The Face-to-Face programme was followed by a Multilingual Short Story Reading, in which Shri Gyan Prakash Vivek (Hindi), Smt. Paramita Satpathy (Odia), and Shri Tariq Chhatari (Urdu) read from their works. Shri Gyan Prakash Vivek read his Hindi story "Moh", which poignantly portrayed the relationship between a husband and wife. The story explored how strained relations led them towards divorce, and how a brief face-to-face meeting helped them realise their mutual strengths and weaknesses, ultimately compelling them to tear up the divorce papers. Smt. Paramita Satpathy, a well-known Odia writer with a wide and realistic narrative canvas, read the Hindi translation of her story "Agni Snata" from Marinityam. The story movingly reflected the inner conflicts and mental anguish experienced by Draupadi—from her birth, through her relationships with the Pandavas, the events of the Mahabharata, and her journey towards nirvana after the war. Shri Tariq Chhatari, eminent Urdu fiction writer, read his story 'Bandook' from Bandook aur Anya Kahaniyan. Through his narrative, he conveyed the message that hatred can spread in society in many ways, but sustained dialogue among people has the power to dispel such animosity and prevent it from enduring.

Both programmes were well received by the audience, comprising students, teachers, writers, and literature enthusiasts, and witnessed meaningful interaction and discussion. Dr Sandeep Kaur, Assistant Editor, proposed the vote of thanks on behalf of Sahitya Akademi

-Pallavi Prashant Holkar

प्रेस विज्ञप्ति

ऐतिहासिक उपन्यास लिखना एक चुनौती है - विधास पाटील

बहुभाषी कहानी-पाठ में तीन रचनाकारों ने प्रस्तुत कीं अपनी कहानियाँ

नई दिल्ली, 16 जनवरी 2026 | नई दिल्ली विध्यु पुस्तक गेला में आज साहित्य अकादेमी द्वारा हॉल नं.- 2 स्थित 'लेखक मंच' पर 'आमने-सामने' और 'बहुभाषी कहानी-पाठ' कार्यक्रम आयोजित किए गए। 'आमने-सामने' कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत दो लेखकों - कुलदीप सिंह दीप (पंजाबी) और विधास पाटील (मराठी) - ने श्रोताओं के समक्ष अपनी रचना-प्रक्रिया साझा की, साथ ही अपनी रचनाओं का पाठ भी किया। 'बहुभाषी कहानी-पाठ' कार्यक्रम में हिंदी के प्रख्यात लेखक ज्ञान प्रकाश विवेक, ओडिआ की प्रख्यात लेखिका प्रतिभा शतपथी और उर्दू के प्रख्यात लेखक तारीक छतारी ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं।

'आमने-सामने' कार्यक्रम में पंजाबी के बाल साहित्यकार कुलदीप सिंह दीप ने अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा कि गाँव के स्कूल में कई बार नाटकों का मंचन किया जाता था और उन्हीं की तैयारी करवाते-करवाते मैं भी नाटक लिखने लगा। मैं गीतों के माध्यम से नाटक लिखता था। उन्होंने अपने नाटक 'छल्ला' के बारे में बताते हुए कहा कि मेरे इस नाटक में कई छल्ले हैं जो घर से कई सपने लेकर निकलते हैं पर कभी वापस नहीं लौटते। 'जलियाँवाला बाग' नाटक मेरा नैनों नाटक है। इसमें 10 छोटे-छोटे नाटक हैं। उन्होंने कहा कि नाटक के माध्यम से इतिहास को पढ़ाया जा सकता है। अंत में, उन्होंने 'कलंगी और घोड़ा' कविता भी प्रस्तुत की।

मराठी के प्रख्यात लेखक विधास पाटील ने अपने चर्चित उपन्यासों 'महानायक', 'पानीपत', 'झाड़ा झाड़ती' आदि की पृष्ठभूमि पर विस्तार से चर्चा की और कहा कि इन उपन्यासों के अनुवाद से मेरा परिचय भारतीय भाषाओं से हुआ। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक उपन्यास लिखना आसान नहीं है। कहानी को प्रस्तुत करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लेखक के पास सबसे बड़ी चुनौती होती है संदर्भ सामग्री के आधार पर पूरा उपन्यास तैयार करना। अपने नए उपन्यास 'द ग्रेट कंचना सर्कस' के बारे में बताते हुए कहा कि यह कहानी रंगून की बमबारी में फँसी सर्कस की लड़की कंचन की कहानी है। मैं हमेशा सामाजिक और ऐतिहासिक नाटक लिखने में मशगूल रहता हूँ।

'बहुभाषी कहानी-पाठ' में हिंदी के प्रख्यात लेखक ज्ञान प्रकाश विवेक ने 'मोह' कहानी प्रस्तुत की। यह कहानी तलाक के केस के दौरान पति-पत्नी को वया-वया गुश्किलों का सामना करना पड़ता है और अंत में कैसे उन्हें अपने निर्णय पर पछतावा होता है, उसी पर आधारित मन को छूती कहानी थी। ओडिआ की प्रख्यात लेखिका पारगिता शतपथी ने 'स्मरे नित्यम' कहानी-संग्रह से 'अभिस्नाता' कहानी प्रस्तुत की। इस संग्रह में पौराणिक पात्रों सीता, द्रौपदी आदि नारी पात्रों और आधुनिक नारी से भिलती-जुलती जीवन स्थिति पर आधारित कहानियाँ हैं। यह कहानी द्रौपदी के जीवन और आधुनिक महिला की एक जैसी जीवन स्थिति पर आधारित थी। उर्दू के प्रख्यात लेखक तारिक छतारी ने 'बंदूक' कहानी प्रस्तुत की। इस कहानी में उन्होंने बताया है कि नफरत के सौदागर तरह-तरह से, समाज में नफरत फैलाते हैं, लेकिन समाज में जब एक-दूसरे से संवाद होता है तो यह खाई ज़्यादा देर तक टिक नहीं पाती। कार्यक्रमों का संचालन सहायक संयादक संदीप कौर ने किया।

- पल्लवी प्रशांत होळकर